INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X 2nd Lang .Hindi	Department: Hindi	Date of Submission : -15-8-19
Worksheet No: 5	Holiday Home work	Note: Pl. file in portfolio

1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

लस्सी का ऑर्डर देकर हम सब आराम से बैठकर एक दूसरे की खिंचाई और हँसी-मज़ाक में लगे ही थे कि एक लगभग 70-75 साल की माताजी कुछ पैसे माँगते हुए मेरे सामने हाथ फैलाकर खड़ी हो गईं ! उनकी कमर झुकी हुई थी, चेहरे की झुर्रियों में भूख तैर रही थी... आँखें भीतर को धंसी हुई किन्तु सजल थीं... उनको देखकर मन में न जाने क्या आया कि मैंने जेब में सिक्के निकालने के लिए डाला हुआ हाथ वापस खींचते हुए उनसे पूछ लिया...."दादी लस्सी पियोगी?"

मेरी इस बात पर दादी कम अचंभित हुईं और मेरे मित्र अधिक... क्योंकि अगर मैं उनको पैसे देता तो बस 5 या 10 रुपए ही देता लेकिन लस्सी तो 35 रुपए की एक है... इसलिए लस्सी पिलाने से मेरे गरीब हो जाने की और उस बूढ़ी दादी के द्वारा मुझे ठग कर अमीर हो जाने की संभावना बहुत अधिक बढ़ गई थी!

दादी ने सकुचाते हुए हाँमी भरी और अपने पास जो माँग कर जमा किए हुए 6-7 रुपए थे वो अपने काँपते हाथों से मेरी ओर बढ़ाए... मुझे कुछ समझ नहीं आया तो मैंने उनसे पूछा... "ये किस लिए?"

"इनको मिलाकर मेरी लस्सी के पैसे चुका देना बाबूजी!"

भावुक तो मैं उनको देखकर ही हो गया था... रही बची कसर उनकी इस बात ने पूरी कर दी! एकाएक मेरी आँखें छलछला आईं और भरभराए हुए गले से मैंने दुकान वाले से एक लस्सी बढ़ाने को कहा...उन्होंने अपने पैसे वापस मुट्ठी में बंद कर लिए और पास ही जमीन पर बैठ गईं ।

अब मुझे अपनी लाचारी का अनुभव हुआ क्योंकि मैं वहाँ पर मौजूद दुकानदार, अपने दोस्तों और कई अन्य ग्राहकों की वजह से उनको कुर्सी पर बैठने के लिए नहीं कह सका!

डर था कि कहीं कोई टोक ना दे.....कहीं किसी को एक भीख माँगने वाली बूढ़ी महिला के उनके बराबर में बिठाए जाने पर आपत्ति न हो जाये... लेकिन वह कुर्सी जिसपर मैं बैठा था मुझे काट रही थी ।

लस्सी कुल्लड़ों में भरकर हम सब मित्रों और बूढ़ी दादी के हाथों में आते ही मैं अपना कुल्लड़

पकड़कर दादी के पास ही ज़मीन पर बैठ गया क्योंकि ऐसा करने के लिए तो मैं स्वतंत्र था... इससे किसी को आपत्ति नहीं हो सकती थी... हाँ ! मेरे दोस्तों ने मुझे एक पल को घूरा... लेकिन कुछ वे कहते उससे पहले ही दुकान के मालिक ने आगे बढ़कर दादी को उठाकर कुर्सी पर बैठा दिया और मेरी ओर मुस्कुराते हुए हाथ जोड़कर कहा.....

"ऊपर बैठ जाइए साहब! मेरे यहाँ ग्राहक तो बहुत आते हैं किन्तु इंसान कभी-कभार ही आता है ।

अब सबके हाथों में लस्सी के कुल्लड़ और होठों पर सहज मुस्कुराहट थी, बस एक वह दादी ही थीं जिनकी आँखों में तृप्ति के आँसू ... होठों पर मलाई के कुछ अंश और दिल में सैकड़ों दुआएँ थीं!

न जानें क्यों जब कभी हमें 10-20-50 रुपए किसी भूखे गरीब को देने या उस पर खर्च करने होते हैं तो वे हमें बहुत ज्यादा लगते हैं लेकिन सोचिए कि क्या वे चंद रुपए किसी के मन को तृप्त करने से अधिक कीमती हैं?

क्या कभी भी उन रुपयों को बीयर, सिगरेट, पर खर्च कर ऐसी दुआएँ खरीदी जा सकती हैं?

*दोस्तो! जब कभी अवसर मिले ऐसे दयापूर्ण और करुणामय काम करते रहें भले ही कोई अभी आपका साथ दे या ना दे, समर्थन करे ना करे... सच मानिए इससे आपको जो आत्मिक सुख मिलेगा वह अमूल्य है ।

प्रश्न - 1 जब लेखक और उसके मित्र हँसी - मज़ाक में लगे थे तब क्या हुआ ?

प्रश्न - 2 लेखक ने किसे देख कर सिक्के निकालने के लिए जेब में डाला हाथ खींचते हुए, उनसे पूछा ?

प्रश्न - 3 किस बात पर दादी कम पर मित्र अधिक अचंभित हुए ?

प्रश्न - 4 लेखक की आँखें छलाछला आईं, उसने दुकानदार से क्या कहा ?

प्रश्न - 5 इस लघु कथा से लेखक पाठकों को क्या संदेश देना चाहता है ?

प्रश्न 2 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों का अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) बेरोजगारी की समस्या

(अ) समस्या के कारण

(ब) समस्या का समाधान

(स) आवश्यकता

(ख) <u>शिष्टाचार</u>

(अ) शिष्टाचार का क्या है ?

(ब) महत्त्व एवं लाभ

(स) बाधक तत्त्व तथा निराकरण

प्रश्न 3 तुलसी के पौधे की स्वास्थ्य सम्बंधी उपयोगिताओं का प्रचार करने के लिए 20-25 शब्दों का विज्ञापन तैयार कीजिए ।

प्रश्न 4 विद्यालय में होने वाले छात्र परिषद् (Students council) के चुनावों (Elections) के बारे में दो मित्रों के संवाद को लगभग 50 शब्दों में लिखिए ।